शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण जीवन में धर्म, त्योहार और संस्कार का समाजा शास्त्रीय स्वरूप

प्रो.शशिकला दुबे
समाजशास्त्र विभाग
शासकीय महारानी लक्ष्मी बाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

ग्रामीण जीवन में धर्म, त्यौहार और संस्कार का बहुत महत्व है। ग्राम्य सभ्यता प्रकृति के सर्वाधिक निकट रहती है। उनके क्रिया-कलापों और दैनिक जीवन में प्रकृति का प्रभाव परिलक्षित होता है । उनके जीवन में प्रकृति घुली-मिली रहती है। कृषि आधारित जीवन होने से वे अपने प्रत्येक कार्य को धर्म से जोड़ देते हैं । प्रकृति के प्रति उनका पूज्य भाव प्रदर्शित होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में धर्म, त्यौहार और संस्कार का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है

प्रस्तावना

महानगरों की तुलना में गांव के लोग अधिक धार्मिक होते हैं। इसका मुख्य कारण गांव का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। विज्ञान चाहे जितनी भी उन्नति क्यों न कर ले , प्राकृतिक शक्तियां मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण बन जाती हैं। प्राकृतिक शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए ग्रामीण मान्यताओं में धार्मिक कर्मकाण्ड , उपासनाएं, उत्सव एवं संस्कार महत्वपूर्ण कारक हैं। शिक्षा के प्रभाव के साथ-साथ धर्म का रूढ़िवादी प्रभाव कुछ कम अवश्य हुआ है , किंतु शिक्षा पूर्ण रूप से मनुष्य को अधार्मिक नहीं बनाती हैं ग्रामीण जन अधिकतर अशिक्षित हैं। इसलिए उनमें तरह-तरह के धार्मिक अंधविश्वास और रूढ़ियां पलती रहती हैं। गांवों के सामाजिक जीवन में शकुन-अपशकुन जैसे बहुतेरे विश्वास काम करते हैं। इन्हें जानने के लिए ग्रामीण धर्म को समझना जरूरी है। गांवों के सामाजिक , आर्थिक, राजनैतिक सभी पहलुओं पर धार्मिक पहलू का प्रभाव पड़ता है। भारत के ग्रामीण समाज में परिवार , विवाह जैसी सामाजिक संस्थाओं पर धर्म की गहरी छाप हैं हरकोट बटलर के अनुसार , "भारतीय धर्म और दर्शन , परलोक, स्वर्ग, नर्क और मोक्ष इत्यादि पर विशेष विचार करता है।"1

ग्रामीण धर्म मनुष्य के जीवन दर्शन को प्रभावित करता है। आचार-विचार , विश्वास, संस्कृति, व्यक्तित्व ये सभी धर्म से प्रभावित हैं। व्यक्तित्व के बौद्धिक संवेदात्मक और व्यावहारिक जीवन में हर कदम पर धर्म के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण का महत्व है। इसीलिए ग्रामीण लोगों के व्यक्तित्व को धर्म के बहुत अधिक निकट से देखा जा सकता है। " "हिंदू धार्मिक दर्शन में कठोरता, बुद्धिवाद, तटस्थता और पलायनवाद का बहुत बड़ा अंश शामिल है। भारत के अलावा किसी भी देश में इतने अधिक लोगों ने दुनिया को नहीं छोड़ा है और किसी भी दूसरी जगह इतना अधिक उपवास और शरीर को कष्ट देना दिखलाई नहीं पड़ता। जगत को अस्थायी और छाया समझा गया है। जगत से और जगत में अस्तित्व के रूपों से पलायन ही सद्वस्तु है।"2

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण जीवन में धर्म, त्यौहार और संस्कार भारतीय ग्रामीण जीवन में त्योहारों और उत्सवों का बहुत महत्व है। भारतीय समाजशास्त्रियों ने संपूर्ण भारत में अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि भारतीय ग्रामों में बारह महीने त्योहार मनाए जाते हैं। इन त्योहारों को निम्न तालिका में दर्शाय गया है:

क्रमांक	महीना	महीना
1	माघ	जनवरी फरवरी
		1 संकट 2 मकर संक्रांति
		3 बसंत पंचमी
2	फाल्गुन	फरवरी-मार्च
		1 होली
		2 शिवरात्रि
3	चैत	मार्च-अप्रैल
		1 जगन्नाथ पूजा
		2 रामनवमी
4	वैशाख	अप्रैल-मई
		3 जगन्नाथ पूजा
5	ज्येष्ठ	मई-जून
		1 जेठ का दशहरा
6	आसाढ़	जून-जुलाई
		आसाढ़ी
7	श्रावण	जुलाई-अगस्त
		1 रक्षा-बंधन
		2 नागपंचमी
8	भाद्र	अगस्त-सितंबर
		1 जन्माष्टमी
		2 तीज
9	क्वार	सितंबर-अक्टूबर
		1 विजयादशमी
		2 पितृपक्ष
10	कार्तिक	अक्टूबर-नवंबर
		1 करवा चौथ
		2 कार्तिक पूर्णिमा
		3 दीपावली
		4 भाई दूज

त्योहारों का सर्वाधिक महत्व धार्मिक दृष्टिकोण से है। भिन्न-भिन्न त्योहारों पर भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। त्योहारों पर गरीबों को दान दिया जाता है। भोजन कराया जाता है। बुरे विचारों को त्यागने के अनेक जतन किए जाते हैं। इसके लिए त्योहारों पर सत्संग होता है। भजन गाये जाते हैं और सामूहिक रूप से कीर्तन किया जाता है। चारों ओर धार्मिक वातावरण निर्मित हो जाता है।

नगर की अपेक्षा गांव के जीवन में परिवर्तन कम होते हैं। इसलिए भारत के नगरों में भारतीय संस्कृति का मूल रूप बहुत कम दिखाई पड़ता है, जबकि ग्रामीण जीवन में भारतीय संस्कृति के विधि-विधान देखे जा सकते हैं। वैसे तो हिंदू धर्म शास्त्रों के अनुसार संस्कारों की संख्या पर शास्त्रकार एकमत नहीं हैं , किंतु भारतीय जीवन में मूल रूप से तेरह संस्कार और उनकी उपादेयता आज भी परिलक्षित होती है।

1 गर्भाधान , 2 जातकर्म , 3 नामकरण , 4 निष्क्रमण, 5 अन्नप्राशन , 6 चूड़ाकर्म , 7 उपनयन, 8 केशांत, 9 समावर्तन, 10 विवाह, 11 वानप्रस्थ, 12 संन्यास, 13 अंत्येष्टि संस्कार भारतीय ग्रामीण जीवन में धर्म , त्योहार और संस्कारों का एक ऐसा केंद्र है , जहां भारतीय संस्कृति केा आदर्श बना हुआ है , जो सामाजिक दृष्टि से भारत वर्ष को आज भी अन्य देशों की तुलना में अग्रणी बनाए हुए है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 ग्रामीण समाजशास्त्र , डॉ.राजेंद्र कुमार शर्मा , एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स , पृष्ठ 249

2 The fact that the highest goal of Hindu is to eliminate earthly concerns, desires and personal existence itself introduce a large

element of asceticism, intellectualism, detachment and withdrawal into. Hindu religious philosophy. In no other country have so many men renounce the world and in no other place is there so much fasting and mortification of the flesh. The world is considered transitory and an appearance. Reality is escape from the world and form the forms which existence in the world makes necessary.